[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 2093 **H**

Unique Paper Code : 62051412

Name of the Paper : HINDI–B

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

   Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

   All questions are compulsory.

1. कहानी की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

नाटक की विकास यात्रा स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

2. "चीफ की दावत" कहानी में दिखावे की प्रवृत्ति उजागर की गई है। इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (12)

अथवा

"बूढ़ी काकी" कहानी में प्रेमचंद ने सामाजिक ताने-बाने पर प्रकाश डाला है। स्पष्ट कीजिए।

3. "ठेले पर हिमालय" के माध्यम से लेखक ने क्या कहने का प्रयास किया है? (12)

अथवा

"मेले का ऊँट" निबंध की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

4. "अंधेर नगरी" नाटक में उस समय की परिस्थितियों का वर्णन है। स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

"बिबिया" का चरित्र चित्रण कीजिए।

5. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए- (10+10=20)

(क) राम-राम, यह भी कोई लड़ाई है। दिन-रात खंदकों में बैठे हड्डियाँ अकड़ गई। लुधियाना से दस गुना जाड़ा और मेंह और बरफ ऊपर से। पिंडलियों तक कीचड़ में धँसे हुए हैं। जमीन कहीं दिखती नहीं;- घंटे-दो-घंटे में कान के परदे फाड़नेवाले धमाके के साथ सारी खंदक हिल जाती है और सौ-सौ गज धरती उछल पड़ती है। इस गैबी गोले से बचे तो कोई लड़े। नगरकोट का

जलजला सुना था, यहाँ दिन में पचीस जलजले होते हैं। जो कहीं खंदक से बाहर साफा या कुहनी निकल गई, तो चटाक से गोली लगती है। न मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए हैं या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।

अथवा

मिस्टर शामनाथ ने इंतजाम तो कर दिया, फिर भी उनकी उथधेड़-बुन खत्म नहीं हुई। जो चीफ अचानक उधर आ निकला, तो? आठ-दस मेहमान होंगे, देसी अफसर, उनकी स्त्रियाँ होंगी, कोई भी गुसलखाने की तरफ जा सकता है। क्षोभ और क्रोध में वह झुँसलाने लगे। एक कुर्सी को उठाकर बरामदे में कोठरी के बाहर रखते हुए बोले- आओ माँ, इस पर जरा बैठो तो।

माँ माला संभालती, पल्ला ठीक करती उठीं और धीरे से कुर्सी पर आ कर बैठ गई। यूँ नहीं, माँ, टाँगें ऊपर चढ़ा कर नहीं बैठते। यह खाट नहीं है।

माँ ने टाँगे नीचे उतार लीं।

(ख) बेटा! तुम बच्चे हो, तुम क्या जानोगे? यदि मेरी उमर का कोई होता तो वह जनता। तुम्हारे बाप के बाप जानते थे कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ। तुमने कलकत्ते के महलों में जन्म लिया, तुम पोतड़ों के अमीर हो। मेले में बहुत चीजें हैं, उनको देखो। और यदि तुम्हें कुछ फुरसत हो तो लो सुनो, सुनाता हूँ। आज दिन तुम

विलायती फिटिन टमटम और जोड़ियों पर चढ़कर निकलते हो, जिनकी कतार तुम मेले के द्वार पर मीलों तक छोड़ आए हो, तुम उन्हीं पर चढ़कर मारवाड़ से कलकत्ते नहीं पहुँचे थे। यह सब तुम्हारे साथ की जन्मी हुई हैं।

अथवा

नागरिक समाज इसे छोटा काम करनेवालों की बड़ी धृष्ठता भी कह सकता है पर मुझे कभी ऐसा नहीं लगता। सम्भवत: इसका कारण मेरे संस्कार हों। अपनी और अपने पिता की ग्रामीण ननसाल में मुझे बूढ़ी नाइन को बदामो नानी, बूढ़े बरेठा को ननकू दादा कहकर पुकारना पड़ता था । वहाँ कोई छोटा-से-छोटा काम करनेवाला भी इतना अभागा नहीं होता कि बड़े काम करनेवालों से ऐसे पारिवारिक सम्बोधन न पा सके। इसी विशेषता के कारण वहाँ नागरिक अर्थव्यवसाय की प्रधानता नहीं मिलती।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए- (7)

(क) भारतेंदु युगीन नाटक

(ख) प्रेमचंद युगीन कहानियाँ

(ग) हिंदी संस्मरण